आधुनिक उपन्यासों में दलितों की सामाजिक स्थिति

श्री रवीन्द्र कुमार

असि0 प्रोफेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय] भतरौंजखान

¼अल्मोड़ा) उत्तराखण्ड

सारांश-

वर्तमान समय में भी दलित समाज के अधिकांश लोग शिक्षा से वंचित है। शिक्षा से वंचित होने के बाद भी वह अपने साथ हो रहे अन्याय के प्रति न्याय प्राप्त करने के लिए जागरूक है। बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर से प्रेरित साहित्यकारों ने हिन्दी दलित साहित्य में शोषित- पीड़ित एवं वंचित वर्ग की समस्याओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का काम किया है। अपने अस्तित्व की तलाश में] अपने मान सम्मान] अस्मिता की रक्षा के लिए दलितों के द्वारा किये जा रहें आन्दोलनों का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा है। इस कारण आधुनिक उपन्यासों में दलितों की सामाजिक स्थिति का वर्णन कहीं न कहीं पर मिल जाता है। समाज में जो अधिकार उनको मिलने चाहिए थे] जिन पर उनका अधिकार था वो आज भी आजाद भारत में दलितों को नहीं मिल पाया है । उनको जाति सूचक शब्दों से अपमानित करने के साथ हीं घृणित दृष्टि से उनको देखा जाता है । उनको समाज में उच्च वर्ग के समान अधिकार एवं सम्मान से दूर रखा जाता है ।

मूल शब्द-

हिन्दू व्यवस्था] सहवास] पृथक्करण] चूहड़ान] धार्मिक कट्टरता] अपमानित आदि

भारतीय सामाजिक संरचना में हिन्दू व्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक पायदान जाति व्यवस्था में अनेक वर्गों में विभक्त है। चाहे वर्ग का आधार जाति हो] चाहे कर्म हो या फिर लिंग। प्रत्येक जगह वर्ग भेदभाव उपस्थित रहता है। अवर्ण कहे जाने वाले दलितों में जगी चेतना के कारण उनको समाज में स्थान दिलाने के लिए उनके मध्य से अनेक आन्दोलनों ने जन्म लिया है। उन आन्दोलनों का मुख्य लक्ष्य खुद को सामाजिक] राजनैतिक] आर्थिक] स्थितियों के प्रति जागृत कर अपने अस्तित्व को बनाये रखना है। दलितों के द्वारा किये जा रहें आन्दोलनों का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ रहा है। इसी कारण आधुनिक उपन्यासों में दलितों की सामाजिक स्थिति का वर्णन कहीं न कहीं पर मिल जाता है।

इस उच्च वर्गीय सामाजिक व्यवस्था में समस्त अधिकार उच्च श्रेणी के सवर्णों को प्राप्त है। जिसके कारण दलितों की सामाजिक स्थिति निम्न श्रेणी की है अर्थात उसको स्वेच्छा से सामाजिक जीवन यापन के अधिकार प्राप्त नहीं है। भारतीय सामाजिक इतिहास में दलितों द्वारा ही प्राकृतिक सम्पदा को सबसे कम मात्रा में दोहन किया गया है। राजनैतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में दलितों की भागीदारी न के बराबर रही है। इस संबंध में डॉ0 कमलेश सिंह नेगी कहते है-&Þआज भी जाति व्यवस्था अपने परम्परागत स्वरूप के अन्तर्गत जितने भी कष्टों और दुःखों को जन्म दे सकती थी] वे समस्त समस्याऐं आज दलित समाजिक जीवन का अंग बन गयी है। समाज में दलितों को अछूत कहा जाता है और इन्हें चण्डाल माना जाता है। खान-पान] रहन-सहन] सहवास आदि सभी र्नियोग्यताओं का दलित लोग शिकार बने।"1 उनके सामाजिक उत्थान के लिये कोई सवर्ण व्यक्तिगत रूप में समाने नहीं आता। भारत की स्वतंत्रता के बाद कई दलितों के उत्थान के लिए कई तरह की योजनाओं और उनके अधिकारों के लिए सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत अनेक कानूनों का निमार्ण कर उनको लागू करने को कार्य किया गया। इसके बाद की दलितों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य पूरा नहीं हो सका है। उनका आधुनिक दौर में भी शोषण एवं उत्पीड़न होेता

रहा है। बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा है कि "यह सामाजिक बहिष्कार मात्र नहीं है । थोडे समय के लिए सामाजिक व्यवहार को बंद कर देना यह प्रदेश पृथक्करण का उदाहरण है] अछूतों को एक काटेंदार तार के घेरे में, एक पिंजरें में बन्द कर देना है ।"2 बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पहली पुस्तक "जाति प्रथा का उन्मूलन" में जातिवाद के जहर को समाप्त करने के एवं सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए जिन तर्को को प्रस्तुत किया उनके समाने बड़े-बड़े जातिवादी निरूत्तर हो जाते है । चिंता की बात तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के पूर्व सामाजिक सुधार के जो आन्दोलन चल रहे थे] आजादी के बाद उनकी दिशा ही बदल गयी। फलतः सामाजिक विसंगतियां एवं समस्याऐं जस की तस बनी रहीं।"3 दलित लेखक रूपनारायण सोनकर के प्रसिद्ध उपन्यास सूअरदान में अन्य दलितों लेखकों की वैचारिक दृष्टि से भिन्न दृष्टि नजर आती है । उन्होंनें उपन्यास में दलितों के साथ होने वाले सामाजिक भेदभाव का दर्शाया है जैसे स्कूल में दलित महिला के हाथ का बना खाना गैर-दलित बच्चों द्वारा नहीं खाया जाता है। रूपनारायण सोनकर द्वारा रचित सूअरदान उपन्यास में एक ऐसे भयानक सत्य का उजागर करने को कार्य कर रहा है जिसमें मनुष्यता की सारी हदें पार कर दी । विदेश से आयी युवती भी अति संवेदनशील होकर अपने विचार प्रकट करते हुए कहती है कि झम्मन] छक्कन] और बक्खन ने मिस हैरी सिल्वा को बताया कि जब भूख से तड़फते थे] तो हम लोग जो जानवरों के गोबर से दाने निकलते थे उनकों धुलकर] सुखाकर पिसते थे फिर उनकी रोटियॉ बनाकर खिलाते-खाते थे। यह सब सुनकर क्रिश्चियन लड़की आंखों में आंसू भर लेती है और कहती है-ओ! माई गाड! लगता है हमारे समाज से ये को अलग समाज है । सदियों से ऐसा जीवन जीता आया है। ऐसे लोगों के जीवन में कोई उमंग नहीं । ऐसे लोग मर-मर के जीते है।"4 *थमेगा नहीं विद्रोह* उपन्यास में जाटवों के कुएं पर गुजर शक्ति के बल पर अधिपत्य स्थापित कर लेतें है । "गुजरों को अचानक भान हुआं कि जाटवों के पीने की जल की आपूर्ति से कहीं अधिक इस कुएं की आवश्यकता उन्हें हैं उनके खेतों की प्यास बुझाने को बीसियों गुजर लाठ बल्लभ लिए जाटवों के कुएं की घेराबंदी कर लेते है और

पानी भरने आई पनिहारिनों का हड़काकार भगा देते है] जाटव बहुतेरी विनती चिचौरी करते है पर परिणाम वही ढाक के तीन पात ।"5 भगवानदास मोरवाल के उपन्यास *बाबल तेरे देश में* जब फत्तू पारों कों अपनी घरवाली बनाकर ले आता है तो गांव की महिलाएं आपस में कानाफूसी करती है-"मोरे तो पहले ही शक हो के जरूर ई को हिन्दुआणी ए करक लायो है । हमारी कौम में छोटी छापरीन को काल पड़गों हो जो ई चाहे उचको लायो है ।"6 इस कारण अन्य महिलाऐं परिवार से भेदभाव करने लगती है । इस भेदभाव की शुरूआत अक्सर गांव के कुंए से होती है - "ब्राह्मण दूससन को दीन खराब करना सू बढ़िया है ये कनू सास-बहू अपना कुआं पे काई लू न चली जाएं---------सिरकार से बनवा तो राखा है] चिमार -चूहड़ान को अलग कुआं ।"7 बाजार की पैक वस्तुओं में कोई भेदभाव नहीं पर घर की चाय में छुआछूत माना जाता है। इस पर सभी को समाज में जाति धर्म की दुहाई देने लगते है । धर्म के नाम पर कट्टरता इस कदर बैठी हुई है कि मनुष्य का मनुष्य नहीं धर्म की तराजू में तोल कर चलते है । हिन्दू से विवाह करने से अच्छा लड़की को बेचना अच्छा मानता है मुसलमान । यह धार्मिक कट्टरता बाबल तेरे देश में मौजूद है -"कई हिन्दू के घर विठाणा सू तो बढ़िया चाहें कहीं बेच देणों । यूनुस के नथुने फड़कने लगे ।"8 वर्तमान समय में थोड़ा परिवर्तन यह आया है कि पढ़े-लिखे लोग समाज की वास्तविक स्थिति को पहचानने लगे है । "अंगन पाखी में पैदल चल रहे पंडित जी गधे की सवारी पर निकले कुम्हार को आगे जाने देते है और मन ही मन अपनी वस्तुस्थिति को स्वीकारतें है----------क्योंकि कमीन कामगारों ने बड़ी जातियों की इज्जत करना छोड़ दिया है ।"9

"किन्तु बेटी के संबंध में ज्यादातर मामलों में अभी भी जाति भेद पक्का है । तभी तो *प्रेम तपस्वी* मे ईसूरी और रजऊ की घनिष्ठता को स्वीकारने के बाबजूद उनके विवाह की कल्पना नहीं की जा सकती -*भगवान ने ईसूरी और रजऊ की ऐसी जोड़ी बनाई है कि देखते बनती है । परन्तु बीच में जाति भेद डाल दिया है ।"10 यहां तक की नये दौर में जब रात्रि पाठशाला लगनी शुरू हुई तब भी औरत आपस में हीं जातीय

विषमता के कारण मतभेद रखने लगी "अहीर औरतें अपने को पासी औरतों से श्रेष्ठ समझती थी, और उनके साथ मिलकर वे नहीं बैठती थी । दमयन्ती ने कई बार समझाया इस तरह छुआछूत रखना ठीक नहीं, आदमी आदमी में भेद नहीं होता ।"11 जातिगत विषमता को समाज में स्वीकार कर लेना चाहिए । समाज में जीवन यापन कर रहे लोग इससे धीरे-धीरे पीछा छुड़ाने की बात करते है । जबकि जातिगत आधार पर राजनैतिक दलों का निमार्ण कर इस समस्या को ओर बढ़ाने का कार्य जन सभाओं के नाम पर कर रहें है । लोगों के जाति के प्रति चेतना और प्रबल हो रही है] किन्तु एक प्रगतिशील समाज के लिए आवश्यक है कि इस तरह के मठों का नाश किया जाए ।

निष्कर्षतः अन्त में कहा जा सकता है कि आधुनिक उपन्यासों में दलितों के जीवन में आये बदलावों को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करके उनके जीवन संघर्ष के लिए आने वाली रूकावटों को बड़ी सरलता एवं सहजता से प्रस्तुत करने का काम किया है । दलितों के जीवन में आये सुधारों को उच्च वर्ग के लोग सामाजिक जीवन में स्वीकार नहीं कर पा रहें है । समाज में जो अधिकार उनको मिलने चाहिए थे । जिन पर उनका अधिकार था वो आज भी आजाद भारत में दलितों को नहीं मिल पाया है । उनको जाति सूचक शब्दों से अपमानित करने के साथ हीं घृणिज दृष्टि से उनको देखा जाता है । उपन्यासकारों द्वारा समाज में दलितों की जिंदगी के कड़वे सच का दर्शाने का कार्य किया है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1-नेगी सिंह कमलेश]"दलित साहित्य के सरोकार",पृ0स0 70 -

2-वही] पृ0स0 70-

3-वही] पृ0स0 70&71-

4-सोनकर रूपनारायण]"सूअरदान]"सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली]वर्ष 2018]पृ0स0 69-

5-जाटव सिंह उपराव]"थमेगा नहीं विद्रोह",वाणी प्रकाशन नई दिल्ली]वर्ष 2016] पृ0स0 66-

6-मोरवाल दास भगवान]"बाबल तेरे देश में]"राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली]वर्ष 2014] पृ0स0 20-

7- वहीं] पृ0स0 27-

8-वहीं] पृ0स0 395-

9-पुष्पा मैत्रेय]"अगन पाखी",वाणी प्रकाशन नई दिल्ली] वर्ष 2003]पृ0स044-

10-दिव्य]प्रसाद अम्बिका]"प्रेम तपस्वी",भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली]वर्ष 2003]पृ0स0 12-

11-अमरकान्त]"ग्राम सेविका",राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली]वर्ष 2009]पृ0स0 39-